Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain college, Ara.

Notes For - M.A.-Sem-I, CC-2, unit-III

Topic:- धौलावीरा (Dholavira):- गुजरात के कच्छ जिले में स्थित धौलावीरा हाल ही के वर्षों में खोजें गये हड़प्पाकालीन दो विशालतम् नगरों में से एक है। इस श्रेणी में दूसरा विशालतम नगर हरियाणा में स्थित राखीगढ़ी है। धौलावीरा भारतीय उपमहाद्वीप का चौथा विशालतम हड़प्पाकालीन नगर है। इस आकार के तीन अन्य नगर हैं- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, एवं बहावलपुर में गनेड़ीवाल (अब यह तीनों नगर पाकिस्तान में है)।

धौलावीरा के प्राचीन स्थलों का पता सर्वप्रथम डॉ. जे. पी. जोशी द्वारा लगाया गया, किंतु आर. एस. बिष्ट तथा उसके सहयोगियों द्वारा (1990-91 में) इस भूमि का उत्खनन किया गया। इसके सामान्य हिस्से हड़प्पा नगरों की सभी विशेषताओं के समान है। लेकिन इसका विलक्षण लक्षण इसके तीन मुख्य विभाजन है। इसके दो नगरों को आयताकार बनाकर इसकी सुरक्षा के लिए किलेबंदी की गई है। ये दुर्ग के सबसे भीतरी भाग संभवतः उच्चतम सत्ता का है, तथा दूसरा मध्यनगर के भाग का संरक्षण करता है, जो प्रशासकों तथा दूसरे अधिकारियों से जुड़ा है। इस मध्य भाग की उपस्थिति, निम्न नगर से अलग करने वाली स्थिति ही इसका विलक्षण लक्षण है। धौलावीरा की किलेबंदी को एक पेचिदा दरवाजे के साथ दिखाया गया है।

→

→ धौलावीरा में अभी कुछ ही समय पूर्व की गई खुदाई से एक अन्य विशाल एवं भव्य हड़प्पाकालीन नगर के अवशेष मिले हैं। इस नगर की विशालता व्यापक दुर्गबंदी / सुरक्षा व्यवस्था से युक्त प्रभावशाली नगरयोजना, सुंदर जल प्रणाली तथा 1000 वर्ष अधिक समय तक स्थायी रहने वाली क्रमिक बस्तियों के एक लम्बे चरण से लगा है।

धौलावीरा की अनेक अद्वितीय विशेषताएं हैं जो किसी भी अन्य हड़प्पाकालीन स्थल से नहीं पाई गई हैं। आर. एस. बिष्ट के अनुसार, धौलावीरा की जनसंख्या लगभग 20,000 थी। किसी भी सिंधु सभ्यता कालीन नगर में कहीं भी अन्यत्र परकोटेदार अथवा परकोटे रहित भागों को जोड़ते हुए एक समान 'परिधीय क्षेत्र' की व्यवस्था नहीं मिलती।

धौलावीरा के मध्य या केन्द्र में स्थित प्राचीर युक्त क्षेत्र जिसे 'मध्यमा' नाम दिया गया है, का शासक वर्ग के संबंधियों / प्रशासकीय अधिकारियों के आवास के लिए प्रयुक्त किया जाता होगा। "मध्यनगर"/ मध्यमा केवल धौलावीरा में ही पाया गया है। ऐसी नगर योजना अन्य हड़प्पा कालीन नगरों में देखने को नहीं मिलती है।